डंगर दाई कुकूबेन

जुही जैन

राजस्थान में एक गांव है उपरगमिया। यहां के लोग जानवर पालकर रोज़ी-रोटी जुटाते हैं। पर जानवरों के इलाज़ के लिए यहां कोई साधन नहीं है। पिछले साल गांव में अकाल पड़ा। जानवर मरने लगे। सभी लोग परेशान थे। सरपंच का बैल बीमार पड़ गया। ओझा को बुलाया गया। उसने मक्का के दाने लेकर मंत्र पढ़ा। फिर लोहे की ज़ंजीर से बैल को पीटने लगा। सरपंच की घरवाली घबरा गई। वह दौड़कर अपनी सहेली कुकूबेन को बुला लाई।

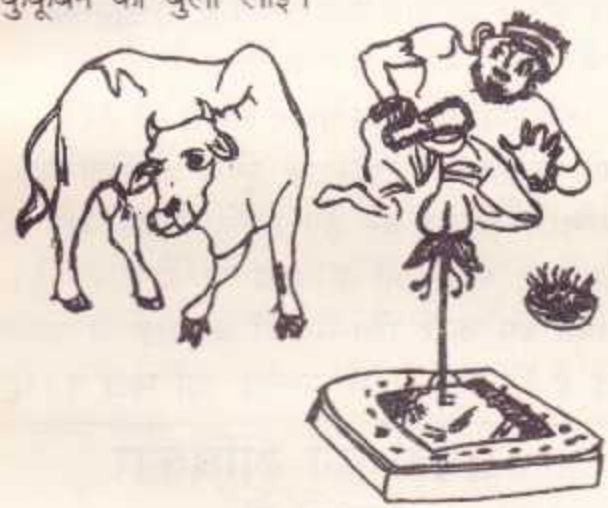

कुकूबेन ने इलाज़ किया

कुकूबेन डंगरदाई का काम करती है। डंगर यानि जानवर। दाई यानि इलाज़ करने वाली। बैल को देखते ही कुकूबेन ने कहा, 'इसे अफारा हो गया है। कड़ी धूप में पका चारा खाने से ऐसा हो जाता है।' उसने दवा बनाकर बैल को पिलाई। फिर उसके पेट पर हाथ फेरने लगी। करीब दो घंटे में बैल को आराम आ गया।

राजस्थान में एक संस्था काम करती है। इसका नाम है जन-शिक्षा एवं कल्याण संस्था। संस्था ने पिछले साल गांव में महिला मेला लगाया था। इसी मेले में कुकूबेन ने औरतों को डंगरदाई का काम सिखाने के बारे में सुना। उसने तय कर लिया कि वह भी यह काम सीखेगी। डंगरदाई बनकर गांव के जानवरों का इलाज़ करेगी।

औरत करे पुरुषों का काम

काम तो कुकूबेन सीख गई। पर गांववालों को उस पर विश्वास नहीं था। फिर जितने मुंह उतनी बातें। औरत डाक्टर का काम करेगी। खुलेआम सब जगह घूमेगी। पुरुष का काम पुरुष को ही शोभा देता है। ओझा ने भी लोगों को भड़काया, 'औरत के हाथ लगाने से जानवर मर जाएंगे।'

कुकूबेन ने हिम्मत नहीं हारी। अपने काम में जुटी रही। औरतों ने उससे चोरी छिपे जानवरों का इलाज़ करवाना शुरू कर दिया। पर पुरुष तो उसके खिलाफ़ थे। जब कुकूबेन ने सरपंच के बैल को ठीक कर दिया तब सबकी आंखें खुलीं। अब सभी लोग उसका आदर करते हैं। जानवर बीमार होने पर अब ओझा को नहीं बुलाते। सीधे कुकूबेन के पास आते हैं। □